श्री लक्ष्मि नरसिंह करावलंब स्तोत्रं

श्रीमत् पयोनिधि निकेतन चक्रपाणे! भोगीन्द्र भोग मणि रञ्जित पुण्य मूर्त्ते
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि पोत! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 1

ब्रह्मेन्द्र रुद्र मरुतर्क किरीट कोटि! सङ्घट्टितांघ्रि कमलामल कान्ति कान्त
लक्ष्मी लसत्कुच सरोरुह राज हंस! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 2

संसार घोर गहने चरतो मुरारे! मारोग्र भीकर मृग प्रवराधि तस्य
आर्त्तस्य मत्सर निधाघनि पीटितस्य! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 3

संसार कूपमधि घोरमगाधमूलं! संप्राप्य दुःख शत सर्प्पसमाकुलस्य
दीनस्य देव कृपणापदमागदस्य! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 4

संसार सागर विशाल कराळ काल! नक्र ग्रह ग्रसन निग्रह विग्रहस्य
व्यग्रस्य राग रसनोर्मिनि पीटितस्य! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 5

संसार वृक्षमघबीज मनन्त कर्म! शाखा शतं करण पत्र मनंग पुष्पं
आरूह्य दुःख पलितं पततो दयालो! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 6

संसार सर्प्प घन वक्त्र भयोग्र तीव्र! दंष्ट्रा कराळ विष दग्ध विनष्टमूर्त्ते
नागारि वाहन सुधाब्धि निवास शौरे! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 7

संसार दाव दहनातुर भीकरोरु! ज्वाला वली बिरधि दग्ध तनूरहस्य,
त्वद् पाद पद्म सरसी रुहमागतस्य! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 8

संसार जाल पतितस्य जगन्निवास! सर्वेन्द्रियार्त्त बडिशाग्रज षोपमस्य
प्रोत्खण्डित प्रचूर तालुकमस्तकस्य! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 9

संसार भीकर करीन्द्र कराभिघात! निष्पिष्ट वर्म्म वपुष सकलार्त्ति नाश
प्राण प्रयाण भव भीति समाकुलस्य! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 10

अन्धस्य मे हृद विवेक महा धनस्या! चोरै प्रभो बलिभिरिन्द्रिय नाम धेयै
मोहान्ध कूप कुहरे विनिपातितस्य! लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलंबं - 11

लक्ष्मी पते कमल नाभ सुरेश विष्णो! वैकुण्ठ कृष्ण मधु सूदन विश्वरूप
ब्रह्मण्य केशव जनार्द्दन चक्रपाणे! देवेश देहि कृपणस्य करावलंबं - 12

लक्ष्मीनृसिंह चरणाब्ज मधूव्रतेन स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि हङ्करेण
ये तत्पठन्ति मनुजा हरिभक्ति युक्ताः स्ते यान्ति तत्पद सरोजमखण्डरूपं ***